



एक विदाई का मौन

जिलेट नैरेटिव — नांदो, लेखक

gillettenarrative.com

मेरी नियति भी कितनी अजीब रही है। हमेशा अकेला। इतनी सारी स्त्रियों के बीच बैठा हुआ। कभी केंद्र में नहीं। सिर्फ एक मेहमान। सच कहूँ तो यह भूमिका मुझे कभी असहज नहीं लगी। कोई और चीज़ थी जो हमेशा मेरा ध्यान खींच लेती थी। कुछ ऐसा जो स्त्रियाँ बिना माँगे ले लेती हैं। पैसा नहीं। वह तो हमेशा सबसे कम दिलचस्प हिस्सा रहा है। वे ध्यान ले लेती हैं। जिज्ञासा। विचार। समय के टुकड़े। तुम्हारी बौद्धिक ऊर्जा के पूरे-पूरे हिस्से। और अधिकांश समय, वे यह किए बगैर ही कर जाती हैं कि उन्हें इसका पता तक चले। पहला नियम हमेशा वही रहता था। उन्हें मुस्कुराओ। पर मूर्ख की तरह बताव किए बिना। क्योंकि हास्य और मूर्खता के बीच बड़ा फ़र्क होता है। पहला बातचीत को खोलता है। दूसरा उसे बंद कर देता है। वरना सबसे शानदार रात्रिभोज भी आखिरकार किसी फ़ास्ट-फ़ूड के भोजन से बढ़कर कुछ नहीं रह जाता। तभी मैंने फ़ौलाद पर अपना निजी मानव-विज्ञानीय सिद्धांत समझाना शुरू किया। मुझे उम्मीद थी कि मैं विश्वसनीय लगूँगा।

ज़रूरी नहीं कि मुझ पर यक़ीन ही किया जाए। मैंने एक दूर की सुबह की कल्पना की। एक आदमी किसी रोमानी मुलाक़ात के लिए अपनी गुफा से निकला था। पर उसकी संगिनी का उसे जाने देने का कोई इरादा नहीं था। वह जंगल में उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। वह जानना चाहती थी कि वह कहाँ जा रहा है। किसके साथ। और क्यों। उन दिनों हर कोई आज़ाद था, और समाजशास्त्रियों ने अभी बहुविवाह जैसी कोई चीज़ ईजाद नहीं की थी। किसी पल वह भड़क उठा। उसने एक पत्थर उठाया और स्त्री को भगाने के लिए उसकी ओर फेंक दिया। पत्थर एक चट्टान से टकराया। एक चिंगारी। फिर दूसरी। फिर धुआँ। बाक़ी काम हवा ने कर दिया। और आग का जन्म हुआ। रोमानी मुलाक़ात वहीं ख़त्म हो गई। जो हुआ था वह कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण था। वह अभी तक किसी नियम-पुस्तिका में दर्ज नहीं था। अमेज़न की नियम-पुस्तिकाओं में भी नहीं। उसे देखा जाना था। समझा जाना था। इस्तेमाल किया जाना था। मेज़ पर बैठी स्त्रियाँ चुपचाप सुन रही थीं। कोई खा नहीं रहा था।

वेटर को सूप वापस रसोई में ले जाकर दूसरी बार गरम करना पड़ा। फिर उससे भी ज़्यादा अजीब बात हुई। पास की मेज़ों पर बैठे कई जोड़े अपनी कुर्सियाँ खिसकाकर हमारे करीब आ गए। यह किसी नाट्य-प्रदर्शन जैसा लग रहा था। और मैं तो बस उन्हें मुस्कुराना चाहता था। यही वह पल था जब मैं विश्वसनीय होना छोड़ बैठा। और विश्वास-योग्य बन गया। मैं एक ऐसी कहानी सुना रहा था जिसे किसी ने कभी नहीं लिखा था। हमारे पुरखों की एक संभव कहानी। मैं रुका। मैंने मैगी की ओर देखा। “क्या तुम चाहती हो कि मैं आगे बताऊँ?” उसने एक पल भी नहीं झिझका। “हाँ, तुम शानदार कमीने।” और हम सब ठहाका मारकर हँस पड़े। फिर मैंने आगे बताया। आग के साथ, स्त्री यह समझने लगी कि इस खोज को भोजन के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। गर्मी ने स्वाद बदल दिए। उसने खुद प्रकृति को ही रूपांतरित कर दिया। बिना जाने-समझे, मनुष्य की जीवन-प्रत्याशा, जो मुश्किल से बीस साल तक पहुँचती थी, धीरे-धीरे चालीस की ओर बढ़ी। आग ने उसे दोगुना कर दिया था। जीवाणु-संक्रमण घटा। संक्रमण पीछे हटे।

मानव शरीर को समय मिल गया। फिर, एक साधारण-सी दोपहर, गुफा के सामने, उसी स्त्री ने कई पत्थर उठाए। उसने उन्हें गौर से देखा। उन्हें आपस में टकराया। उनका अध्ययन किया। बिना किसी भट्टी के। बिना किसी इस्पात-कारखाने के। बिना किसी अभियंता के। उसने वह लंबी यात्रा शुरू की जो आखिरकार धातु तक ले जाने वाली थी। और उसके बाद, फ़ौलाद तक। इसी वजह से, अगर वह स्त्री न होती, तो मैं आज यहाँ न होता। मैं तुमसे कभी न मिलता। मैं तुम्हारी क्रूर कभी न कर पाता। मैं जो बन गया हूँ, उसे एक विदा के भीतर कभी लपेट न पाता। मेज़ पर सन्नाटा छा गया। बाक़ी सब सन्नाटों से अलग एक सन्नाटा। यह प्रतीक्षा का सन्नाटा नहीं था। यह विदा का सन्नाटा था। मैंने मैगी की ओर देखा। मैंने उसकी बेटी की ओर देखा। मैंने उसकी नातिनों की ओर देखा। और मुझे अहसास हुआ कि मैं किसी परिवार को अलविदा नहीं कह रहा था। मैं एक कहानी को अलविदा कह रहा था। विल्किंसन परिवार। आपका स्वागत है।

मैं उठा और चल पड़ा। क्योंकि किसी स्त्री के आँसू मुझसे कभी सहे नहीं जाते।

फर्दिनांदो फ्रेगा